गुरु का काम सेवा और सहारा देना है

सच्चाई यह है कि गुरु के मुताबिक चलोगे तो सहायता ज़रूर मिलेगी. अगर तुमने इन बातों को माना कि खिदमत करना हमारा फ़र्ज़ है, तो हर वक़्त ध्यान रहे कि हम 'गुरु' नहीं हैं. अगर मन ज़रा भी तंग करे तो ठोकर मार कर उसे नीचे पटक दो, और ऐसी जगह बैठो जहाँ यह ख्याल न हो कि में ऊँची जगह बैठा हूँ, गुरु हो गया हूँ. नीची जगह जाकर बैठ जाओ. पैर छुआने में अगर तुमको गरूर (अभिमान) आने लगा है तो कभी किसी से पैर मत छुआओ. जिस चीज़ से ज़रा भी गरूर हो उसे तोड़ कर फेंक दो. हमारे यहाँ का तरीक़ा तो खिदमत (सेवा) का है. अपनी जान फ़िदा (न्योछावर) कर दो गुरु पर .जब तक ये दोनों बातें यानी प्रेम और सेवा रहेंगी, आपका तरीक़ा चलेगा. प्रेम करो, सेवा करो.

दूसरी बात जो मैं अर्ज़ कर रहा हूँ, इसकी गवाह है रामायण और श्रीमद भगवत गीता. आप देखिये, ऋषि व्यास जी फरमाते हैं कि परमात्मा सबसे ज़्यादा उसको प्यार करता है जो उसके (परमात्मा के) नाम को फैलाता है. इस नाम के लिए ही भगवन कृष्ण फरमाते हैं कि प्राणियों में सबसे ज़्यादा प्यारा मुझको वह है जो मेरा नाम जपता है और दूसरों का भला करता है. तो गुरु जब किसी से मोहब्बत करता है तो उसकी जाँनिसारी (जी जान से न्योछावर होने) का बदला देना चाहता है तो ऐसे शिष्य को अपना प्रेम देता है. गुरु जिससे (ईश्वर से) प्रेम करता तो जो उससे प्रेम करने लगता हैं, उसमें भी परमात्मा का प्रेम आ जाता है और आहिस्ता-आहिस्ता वह चमक उठता है.

शुरू के अन्दर गुरु का प्रेम नाज़राता है, मगर थोड़े दिनों के बाद नज़र आएगा कि गुरु का प्रेम नहीं रहता और गुरु की जगह परमात्मा ले लेता है. गुरु का ख्याल भी नहीं आता. गुरु का ख्याल तो ऐसे नज़र आता है जैसे कि शादी होने के बाद एक बेटी को अपने बाप का ख्याल आता है. रिश्ता तो उसका अब अपने पति से होता है लेकिन मुसीबत के वक्त कभी-कभी वह अपने बाप को याद कर लेती है. इसी तरह से अभ्यासी का गुरु पिता समान और पति परमात्मा होता है. गुरु वास्तेदार (माध्यम) बीच में है. पाल-पोसकर बड़ा कर देता है और जब स्त्री (शिष्य) की जवानी (पूर्णता) का वक्त आता है तो पति (परमात्मा) के हवाले कर देता है और खुद पीछे हट जाता है. अब अभ्यासी साधक का लक्ष्य उसका पति परमात्मा है.

इसी तरह से गुरु उम्र भर सेवा करके उसको (शिष्य को) तैयार करता है और जब देखता है कि जवानी के आसार (लक्षण) आ गए यानी जब शिष्य में परमात्मा का प्रेम झलकने लगता है, तब वो उसके (परमात्मा के

) सामने कर देता है, खुद पीछे आ जाता है. यह बात बिलकुल साफ़ है कि गुरु परमात्मा के बीच में कभी नहीं आएगा. असली गुरु तो परमात्मा है, देहधारी गुरु तो एक ज़रिया (माध्यम) था. हाँ, वह (गुरु) उम्र भर देख-भाल तो रखता है और मदद करता रहता है.

तन का सुख, इन्द्रिय सुख, मन का सुख और बुध्दि का सुख - सबको समता में लाकर इष्ट के अर्पण कर दें, अपने आप को पूर्ण रूप से परमात्मा के हवाले कर दें. इसके बाद कुछ करना-धरना नहीं रहता. इसके लिए गुरु कि सेवा और गुरु का सहारा ही उसे निकाल ले जाएगा.

गुरुदेव तुम्हारा कल्याण करें.